International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 1; Issue 2; February 2016; Page No. 69-71

मृणाल पाण्डे की कहानियों में यथार्थ बोध

नीलम

रिसर्च विद्वान, लवली प्रोफेशनल युनिवर्सिटी, फागवारा, पंजाब, भारत।

प्रस्तावना

यथार्थ का क्षेत्र बहुत व्यापक है। वह सम्पूर्ण को प्रभावित करता है। साहित्य जीवन का यथार्थ है। यथार्थ विभिन्न विधाओं के माध्यम से साहित्य में व्यक्त होता है। समाज में घटित विभिन्न घटनाएं साहित्यकार पर प्रभाव छोड़ती है। जो साहित्यकार इन धारणाओं को अपनी रचनाओं में स्थान देता है, वही साहित्यकार यथार्थवादी साहित्यकार कहलाता है। सच्चे यथार्थवादी साहित्यकार कहलाता है। सच्चे यथार्थवादी साहित्याकार की विशेषता यह हैं कि बिना किसी भय या पक्षपात के ईमानदारी के साथ वह जो कुछ भी देखता है उसका चित्रण करें।''[१] यथार्थ बहुआयामी शब्द है। इसलिए इसकी सर्वमान्य और निर्विवाद परिभाषा विद्वानों ने इसको अपने-अपने ढ़ंग से परिभाषित किया। हिन्दी साहित्य कोश में यथार्थ को चिन्तन की विशिष्ट पद्धति माना है।''[२]

डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी यथार्थ में आदर्श का समावेश उचित नहीं मानते। उनके अनुसार, ''यथार्थवाद का मूल सिद्धान्त वस्तु को उसके मूल रूप में चित्रित करना है। न तो उसे कल्पना के द्वारा विचित्र रंगों से अनुरंजित करना है न ही किसी धार्मिक या नैतिक आदर्श के लिए कांट-छांट कर उपस्थित करना है।''[३]

कंजमिया यथार्थवाद की एक विचारधारा मानते है - यथार्थवाद साहित्य में एक शैली नहीं बल्कि एक विचारधारा है।[४]

प्रसिद्ध लेखिका मृणाल पाण्डे जी का साहित्य इसी प्रकार की प्रबुद्ध सामाजिक चेतना से अनुप्रणित है। इस तीव्र सामाजिक चेतना ने उन्हें यथार्थ को विभिन्न दृष्टिकोण से चित्रित करने के लिए विवश किया। यथार्थ चित्रण की यह प्रवृति विभिन्न परिस्थितियों से जुड़कर नए नाम पाती गई। उनकी रचनाओं में एक ऐसा विवेकयुक्त वैज्ञानिक दृष्टिकोण मिलता है जो पारम्परिक मूल्यों पर प्रश्न चिन्ह लगाकर उनका युग-सम्मत संस्कार करता है। प्रत्येक सामाजिक सम्बन्ध और रिश्तों के पुर्नमुल्यांकन में उनकी यही दृष्टि रही। सामाजिक, वैयक्तिक, पारिवारिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक यथार्थ के प्रभावित नहीं रही बल्कि सबको यथार्थ की खुरदरी जमीन पर जांच रखकर निस्संग दृष्टि से अंकन किया है।

वैयक्तिक यथार्थ को चित्रित करते हुए वे कहती हैं कि व्यक्ति का व्यवहार विचार, स्वभाव सभी समाज को प्रभावित करते हैं।, 'चिमगादड़े' कहानी के माध्यम से उन्होनें बताया कि व्यक्ति असफलताओं, अधूरी आकांक्षाओं, तृप्त इच्छाओं के बीच जी रहा है। जब ये इच्छाएं पूरी नहीं होती तो वह छटपटाने लगता है। मारिया व सोनिया भी इसी घुटन, कुंठा, अजनबीपन जैसी समस्याओं से ग्रस्त हो जाती है। उनकी वृद्ध मां भी अपनी बेटियों को जरूरत के समय पैसा नहीं देती, जिससे बेटियां भी उसके प्रति लापरवाह हो जाती है। ''एक क्षण को मारिया का मन हुआ कि बुढ़िया की गर्दन के पीछे की झुर्रीदार खाल चुटकी में पकड़कर उसे ऊपर उठा ले, जैसे कुत्ते के पिल्लों को उठाया जाता हैं और झकझोर-झकझोरकर मक्खन की तश्तरी में उसकी नाक रगड़ डाले जा-किसी होटल में और दो ओंस की टिकिया को हफ्ते भर में चला लें।[५]

पारिवारिक यथार्थ को व्यक्त करते हुए मृणाल जी परिवार को समाज की महत्वपूर्ण इकाई मानती है, क्योंकि परिवार व्यक्ति और समाज दोनों को प्रभावित करता है, लेकिन आधुनिक भौतिकतावादी युग में औद्योगिकरण, नगरीकरण, प्रेम विवाह, अन्तजार्तीय विवाह, विचारों में असमानता के कारण संयुक्त परिवार उन्हें लुप्त होते नजर आते हैं।

'कैंसर' कहानी में लेखिका इसी समस्या को उजागर करती दिखाई दी हैं। उन्होनें बताया कि नगरीकरण, विचारों में असमानता के कारण बेटों में मां-बाप के प्रति कोई लगाव नहीं, ''इस बार सिर्फ हफ्ते की छुट्टी ले पाया था, सो उसे वापस लौटना होगा। जैसे ही जरूरत होगी, बड़के भैया तार या फोन से खबर कर देंगे। वह तुरंत आ..... ...दामिनी जीजी से फोन पर बात हुई थी, अभी जीजा जी की छुट्टी नहीं है, फिर अभी तो बाबू जी ठीक ही, तभी खबर कर .....बच्चों का भी स्कूल... फिर नोटों का एक पुलिंदा उसके पास सरकार वह उठ गया।''[६]

पारिवारिक यथार्थ को 'प्रतिशोध' कहानी में दर्शाया गया है जिसमें असमय विधवा जो अपाहिज भी हैं और एक भाई, इन दोनों के पालन-पोषण बेटी दमयन्ती करती है। लेकिन मां के ज्यादा बीमार होने पर नौकरी भी छोड़ देती है। दमयन्ती की मां अक्सर दमयन्ती के विषय में सोचकर रोती हैं कि वह उनके लिए कितना त्याग कर रही हैं - ''और फिर रो-रोकर अपनी जीर्ण देह को कोसने लगती है, जिसके बन्धन से बेटा-बेटी दोनों पराधीन हो गए है। अच्छी खासी नौकरी उनके खातिर छोड़ आयी पगली और उन्हें भगवान मांगे से मौत भी नहीं देता, कैसी विड़म्बना है?''[७] यथार्थ के संदर्भ में मृणाल जी समाज में नारी की दीन-हीन स्थिति को उजागर करती है। 'एक थी हंसमुख दे' कहानी में मध्यकालीन सामंती व्यवस्था में बंदिनी नारी की स्थिति का यथार्थ चित्रांकन हुआ, लेकिन कहानी की 'हंसमुख दे' कभी पुरूषों का विरोध भी करती है। वह पैरों की जूती नहीं बनना चाहती। वह सोचती हैं कि सारी व्यवस्था में जन्म से मृत्यु तक नारी को यही सिखाया जाता हैं कि वह पुरूष का विरोध न करें, समाज के सारे कानून नारी के लिए हैं। स्वयं उसकी मां भी नारी की पराधीनता उचित मानती, ''उसूल-कानून, गुरू, पिता, स्वामी पर लागू नहीं होते। जब कभी भी नारी ने इसका

विरोध किया तो अन्य नारियों ने ही इसका प्रतिवाद किया, 'तिरिया होकर स्वामी से बहस'।'' व्यक्ति और समाज से सम्बन्धित होने के कारण मृणाल जी की साहित्यिक रचनाओं में राजनीति का समाहित होना स्वाभाविक है।

राजनीतिक यथार्थ का अंकन करते हुए मृणाल जी ने राजनीति में हो रहे भ्रष्टाचार, अन्याय, धोखाधड़ी जैसी विकृतियों पर प्रकाश डाला है जो राजनीति के यथार्थ बन चुके है। राजनीतिक क्षेत्र में उन्होनें महिला की राजनीति में सहभागिता पर प्रकाश डाला। मृणाल जी कहती हैं कि आज महिलाएं राजनीतिक क्षेत्र में ऊंचे से ऊंचे पद पर पहुंच गई, परन्तु फिर भी उन्हें पूरे अधिकार नहीं मिले। चुनावों में महिलाएं खड़ी तो हो जाती परन्तु चुनावों के बाद उनकी संख्या कट-छंट कर दो तीन ही रह जाती। राजनीति में उन्हें केवल साधन की तरह उपयोग किया जाता है, ''क्या आपने कभी उन रपटों में स्त्रियों की उपस्थित या अनुपस्थिति पर गौर किया है, जब उच्चतम स्तरों पर कूटनीतिक वार्ताएं, आर्थिक गठजोड़ अथवा शास्त्रास्त्रों के विनिमस संबंधी पुरूषों के ही हाथों में दिखते है। इनमें स्त्रियों का प्रवेश बहुत करके चेरी-दूती (यानी सक्रेटरी) अथवा नर्हीं (अधिकारिक प्रवक्ता) की ही बतौर होता है। जब राष्ट्र प्रमुख दस्तखत करने को कागज सामने खींचते हैं तो वे ढ़क्कन खोलकर कलम पेश कर देती हैं और जब दस्तखत हो जाने के बाद संधिपत्रों को आदान-प्रदान होता हैं तो वे तालियां बजाती है।''[८]

आर्थिक स्थिति का यथार्थ चित्रांकन मृणाल जी ने अधिकारिक धन प्राप्ति की होड़ के कारण उत्पन्न विसंगतियों के कारण किया। 'दरम्यान' कहानी में बताया कि आधुनिक अर्थव्यवस्थाा के निम्न वर्ग को अधिक प्रभावित किया है। निम्न वर्ग अपने परिवार के पालन-पोषण के लिए विदेश में पैसे कमाने जाता है। यद्यपि वह वहां से वापस आने को छटपटा रहा, लेकिन आ नहीं पाता, बल्कि एक अच्छे मकान में किराए पर भी नहीं जी सकता। ''जब कभी उसने इस खसूट मकान-मालकिन के शिकंजे से निकलकर कहीं अच्छी बस्ती में बसने की ठानी, तब शान्ता का खत आ जाता हैं कि इस बार कार और घर के कर्जे की माहवारी किश्त चुकाने का पैसा नहीं बच पाया। दांत से कौड़ी पकड़कर सेंता हुआ पहले दो तीन सालों का बचाया पैसा शान्ता के कर्जे उतारने और पुश्तैनी मकान के दालान-छज्जे पुख्ता करने में खप गया। फिर अभी तो शान्ता क्षमा भी ब्याहने को तैयार बैठी है।[९]

भारतीय पर्वोत्सव, रीति-रिवाज, धार्मिक, सहभाव आदि विशेषताओं के द्वारा धार्मिक यथार्थ चित्रित हुआ है। 'एक स्त्री का विदागीत' कहानी संग्रह में मृणाल जी ने दर्शाया हैं कि धर्म के प्रति मनुष्य की गहरी आस्था होती है और धर्म ही मनुष्य में सद्भावना लाता है। ''मेरे बचपन में हर शनिचर-मंगल महिला समूह बड़ी सजधत और तैयारी के साथ मंदिरों की प्रयाण करता, धूप-बताशा, हैजलीन स्नो की शीशियों में कड़वा तेल और जंगली फूल की डलिया लिए। नवरात्रों में और भी ज्यादा रौनक रहती। घर-घर कलश स्थापना होता, पाठ होता रहता। दशहरे के दिन नन्दा देवी का डोला उठता और अलमोड़ा के राजा साहब रेशमी रूमाल से आंखे पोछते उसे विदा देते।''[१०]

इस प्रकार हम कह सकते हैं मृणाल जी ने अपने साहित्य का सम्बन्ध बाह्य जगत से न मानते हुए समाज की अंतरात्मा से माना और समाज के सुंदर, कुरूप, सद्, असद् आदि तत्वों से परिचित कराया। अतः जीवन और समाज का यह यथार्थ उनके साहित्य में कई रूपों में स्वस्थ और विकासोन्मुख दृष्टि से उभरा है।

'सृष्टि प्रक्रिया में जितना महत्व नर का है, उतना ही महत्व नारी का भी है। भारतीय परम्परा में धार्मिक अनुष्ठान के लिए नारी का महती आवश्यकता बताई गई हैं। पत्नी के बिना धार्मिक अनुष्ठान का सम्पादन अंसभव ही है।''[११] मृणाल पाण्डे जी ने दूसरे वर्ग की नारी को ही अपने साहित्य सृजन का विषय बनाया है। स्त्रियों की इस व्यथा को सैद्धान्तिक रूप में नारी को इन बंधनों से मुक्त करने के सकरात्मक प्रयत्न दर्शाये है। मृणाल पाण्डे जी ने भावुकता से अलग होकर नारी की यथार्थ स्थिति का मूल्यांकन किया और आगे के लिए दिशा-निर्देश दिए। इनका मानना हैं कि अपने अधिकारों के लिए लड़ना कोई पाप नहीं हैं, बल्कि पाप है अपने अधिकारों से वंचित होकर विवश बैठ जाना। जब तक नारी में यह जीवनी शक्ति उत्पन्न नहीं होगी, तब तक उसका विकास नहीं हो सकता। तभी वह खुद के विकास के साथ-साथ देश के विकास में सहायक बन सकती है। 'परिधि पर स्त्री' नामक निबन्ध संग्रह में मृणाल जी ऐसे ही विचार प्रस्तुत कर रही है, ''अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय दोनों ही क्षेत्रों में नारी संगठनों ने सामाजिक कुरीतियों, साम्प्रदायिकता, प्रतिगामी, कठमुल्लेपन और भ्रष्टाचार का लगातार मुखर विरोध करने में भी पुरूषों का साथ दिया है।''[१२]

नारी के विभिन्न रूपों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण मातृत्व है। मृणाल जी ने माता को धैर्य, सहनशीलता, त्याग और ममता की प्रतिमूर्ति दिखाया है। बच्चे अच्छे बुरे हो सकते है, परन्तु मां हमेशा अपने बच्चों पर प्यार ही लुटाती है। मृणाल जी का मातृ रूप में नारी का वर्णन सकरात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। जहां एक ओर प्राचीन रूढ़िवादी मां है जो बेटियों को यही शिक्षा देती हैं कि उन्हें घर का काम करना चाहिए, दूसरी और कुछ आधुनिक स्वच्छन्द माता भी है जो अपनी बेटियों को भी वैसा ही बना देना चाहती है। 'कैंसर'' कहानी में सुरजी और उनकी सास के आत्मीय सम्बन्धों का चित्रण हुआ है जो वर्तमान समय में दुर्लभ है। इस प्रकार मृणाल जी ने अपने साहित्य के अनेक सकरात्मक रूपों का वर्णन किया है, जिसमें नारी कभी पत्नी, कभी बेटी, मित्र, सास-बहू, प्रेमिका, माता के रूप में प्रस्तुत हुई है।

अब तक के समाज का इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास है। यह वर्ग संघर्ष शोषक, शोषित वर्ग के बीच का संघर्ष रहा है। शोषक वर्ग उत्पादन के समस्त साधनों का मालिक होकर शोषित वर्ग के श्रम से उत्पादित वस्तुओं का वास्तविक लाभ नहीं देता, जिससे शोषित वर्ग का असंतोष एक न एक दिन दावानल का रूप धारण कर लेता है। मृणाल पाण्डे जी ने भी शोषित वर्ग का ऐसा ही चित्रण अपने साहित्य में किया। शोषित वर्ग के रूप में रहने वाली महिलाएं पुरूषों की तुलना में कम वेतन और कम सुविधाएं प्राप्त करती है। इन्हें घर का काम भी करना पड़ता है, बाहर का भी। गांव सताता है, उन्हें और भी अनेक समस्याओं का शिकार होना पड़ता है, ''अधिकतर स्त्रियों ने बताया कि गांव के खुले तथा सामाजिक रूप से सुगठित माहौल के बाद अपरिचित शहरी माहौल में इनको गहरी दहशत से गुजरना पड़ता है। झोपडपट्टियों के

दादाओं की विवशता और व्यस्क बच्चों का इस माहौल में बिगड़ते जाना इनके अवसाद और डर को और भी बढ़ाता है।''[१३]

निष्कर्ष

कहा जा सकता है कि पुलिस का आतंक उसका शोषणमूलक प्रवृति, रिश्वतखोरी, शोषकों की अंध-भक्ति और समर्थन, सर्वहारा, विरोधी मानसिकता, अन्यायपूर्ण कानून की शक्ति का दुरूपयोग, बर्बरता आदि ने भी पुलिस की छवि को इतना बिगाड़ दिया हैं वह शोषित वर्ग के लिए अविश्वसनीय एवं मक्कार हो गई है। मृणाल पाण्डे जी ने शोषितों का अपने साहित्य में चित्रण करके उन्हें शोष्ज्ञण से मुक्ति के उपाय भी बतायें हें कि यदि वे न्याय पाना चाहते हैं तो संगठित होकर संघर्ष करने के सिवा शोषित वर्ग के पास दूसरा कोई विकल्प नहीं। ''बहुत सोचकर और देखकर हमें आज यह बोधज्ञान मिला है कि ताकत तलवार की तीखी नोक से ही निकलती है।''[१४] अतः तभी वह शोषण मुक्त, भेदभाव रहित, वर्गहीन जिसमें सभी लोग सुख चैन से रहे, जहां आपस में शान्ति, एकता, बंधुत्व की भावना हो, ऐसे समाज की स्थापना कर सकेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

१. जार्ज लुकाव, स्टडी इन यूरोपियन रियलिज्य, पृ.१३७।
२. हिन्दी साहित्य कोश, भाग-१ (साहित्यिक शब्दावली): (तृतीय संस्करण, १९८५, पृ.५१०)।
३. डा. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य, पृ.२५।
४. कंजमिया, हिस्ट्री ऑफ इंग्लिश लिट्रेचयर, पृ.१५।
५. मृणाल पाण्डे, दरम्यान, पृ.२२।
६. मृणाल पाण्डे, दरम्यान, पृ.१४३।
७. वही, एक नीच ट्रेजड़ी, पृ.८९।
८. मृणाल पाण्डे, परिधि पर स्त्री, पृ.२९।
९. वहीं, दरमयान, पृ.१३४।
१०. वही, एक स्त्री का विदागीत पृ.१४।
११. गोपाल शर्मा, संस्कृत लोककथा में जीवन, पृ.६८।
१२. मृणाल पाण्डे, परिधि पर स्त्री, पृ.९।
१३. मृणाल पाण्डे, परिधि पर स्त्री, महिला शरणार्थी की त्रासदी, पृ.५०।
१४. वहीं, पृ.४६।